**Mr.Sanjay Kumar**
**(Assistant Professor)**
**Dept.Of Psychology**
**C.M.J. College, Donwarihat**
**Khutauna,Madhubani**
**9905430675(Mobile/WhatsApp)**
**Email- sanjayuttam725@**

B.A. PART -I. PAPER-I

# संवेदन (SENSATION)

संवेदन एक सरल प्रारंभिक संज्ञानात्मक मानसिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा हमें वातावरण में उपस्थित उद्दिपकों यथा वस्तुओं एवं प्राणियों के बारे में एक आभास मात्र जानकारी अर्थात अर्थहीन ज्ञान प्राप्त होता है। वातावरण में उपस्थित उद्दीपक जब हमारे ग्राह्य अंगों को प्रभावित करते हैं तो इसकी सूचना तंत्रिका आवेग के रूप में हमारे मस्तिष्क में पहुंचती है, जिससे संवेदन होता है।
संवेदन की उत्पत्ति में तीन तत्व समाहित होते हैं-- उद्दीपक, ज्ञानेंद्रीय तथा मस्तिष्क।जब वातावरण में उपस्थित कोई उद्दीपक किसी व्यक्ति के ज्ञानेंद्रियों को प्रभावित करता है तो उसके ज्ञानेंद्रिय में एक रासायनिक क्षोभ उत्पन्न होता है, इस रसायनिक क्षोभ को तंत्रिका आवेग कहते है।यह तंत्रिका आवेग संवेदी तंत्रिका के द्वारा मस्तिष्क में पहुंचता है जिसके परिणाम स्वरूप एक मानसिक प्रक्रिया की शुरुआत होती है। इस मानसिक प्रक्रिया को ही संवेदन कहा जाता है। जैसे एक चींटी आपके पैर में काटती है जिसकी सूचना त्वचा (ज्ञानेंद्रिय) के द्वारा मस्तिष्क को भेजी जाती है। जिससे आपको आपके पैर में एक दर्द का आभास होता है। यह संवेदन होता है। ध्यान रहे आपको सिर्फ कुछ के काटने या दर्द का आभास होता है ना कि उस चींटी के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।जब आप यह जान जाते हैं कि आपको चीटि ने काटा है तो यह संवेदन ना होकर प्रत्यक्षीकरण हो जाता है।
संवेदन के संबंध में विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने अपने-अपने ढंग से परिभाषाएं दी है।-
जेपी दास के अनुसार --"उद्दीपकों को प्राप्त करने की पहली अवस्था को ही संवेदन कहा जाता है।"
ऊड एवं ऊड के शब्दों में-"संवेदन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके दवारा ज्ञानेंद्रियां दृष्टि, श्रवण, एवं अन्य संवेदी उद्दीपकों की पहचान करके उसकी सूचना मस्तिष्क को देता है।"
संवेदन की उपरोक्त विवेचना एवं मनोवैज्ञानिकों द्वारा प्रदत परिभाषाओं का विश्लेषण करने पर पर संवेदन के संबंध में निम्नलिखित बातें दृष्टिगोचर होती है-
1) संवेदन एक प्रारंभिक मानसिक प्रक्रिया है
2) संवेदन एक सरल संज्ञानात्मक मानसिक प्रक्रिया है
3) संवेदन में उद्दिपकों( वस्तु या प्राणियों) का आभास मात्र अर्थात अर्थरहित ज्ञान होता है
4) संवेदन के लिए उद्दीपक की उपस्थिति अनिवार्य होती है

स्पष्टत: संवेदन एक ऐसी प्रारंभिक संज्ञानात्मक मानसिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा हमें उद्दीपक का आभास मात्र या अर्थरहित ज्ञान होता है ।

15/07/2020. - Sanjay Kumar